International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

मुगल समाज और संस्कृति

Kavita
M.A HISTORY, UGC (NET)

शोध –आलेख सार :

भारत में मुगलों का उद्य 16वी शताब्दी के उत्तरार्द्व में हुआ। बाबर के आगमन से तीन शताब्दीयों से चली आ रही दिल्ली की मजबूत नींव को हिला कर रख दिया और इसी के साथ ही एक नई शक्ति का उदय हुआ। प्रारम्भिक शासक बाबर व हुमाऊँ के भाग्य ने उनका साथ नही दिया और वे अपने स्थायितत्व के लिए निरंतर सघर्षरत रहें। परन्तु आने वाले शासक अकबर, जहांगीर, शांहजहा आदि के समय मुगल सम्राज्य में आर्थिक, समाजिक, संस्कृतिक, चहुँमुखी विकास हुआ। 17वी. शताब्दी के उत्तरार्द्व में यह विकास अपने चरमोतकर्ष पर पँहुच गया। मुगलकाल में आर्थिक, सामाजिक और संस्कृति स्थिति की यह विशेषता थी कि वहां एक और शासक वर्ग बहुत आडम्बरपूर्ण था। वहीं दूसरी और आम जनता, किसान, शिल्पी, मजदूर बहुत गरीबी का जीवन व्यतीत करते थे। मुगलकाल में जीवन स्तर की जानकारी हमें 16वी व 17वी शताब्दी में आए विदेशी यात्रियों द्वारा लिखा गया विवरण देता है। जिनमे फारसी, विदेशी वृतातं आदि उपलब्ध है। 17वी. शताब्दी में इस देश में मुंगलकालीन समाज आदमनी, प्रथाओं और उपयोग के रूवरूप की दृष्टि से अनेक वर्गो और स्तरों में विभाजित था। इसलिए हम उनके जीवन स्तर के बारे में अलग–अलग रूप से विचार कर सकते है।

मुख्य शब्द

समाज, संस्कृति, चरमोत्कर्ष, वृतांत, प्रथा, शिल्पी, कारकून, शैली, राजपूत, खुदकाश्त, मकबरा, शहतीर, अलंकरण, सर्वोकृष्ट, चुतर्भुजाकार

मुगलकालीन समाजिक जीवन

मुगलकालीन सामाजिक जीवन कई भागों में विभाजित था। जिसमें उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग शमिल थे। उच्च वर्ग विलासितपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। आर्थिक दृष्टि से उच्च वर्ग को विशेष अधिकार प्राप्त थे। इनका जीवन स्तर अच्छा था। मध्यम वर्ग में व्यवसायिक वर्ग, अधिकारी वर्ग आदि शामिल थे। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में इनका महत्वपूर्ण स्थान रहता था। गांव में रहने वाले धनी लोग शानो शौकत से जीवन व्यतीत करते थे। निम्न वर्ग की स्थिति दयनीय थी। इनका जीवन स्तर निम्न था।

उच्च वर्ग

मुगलकाल में उच्च वर्ग के अमीर सरदार, स्वशासी राजा, नगरों के धनी व्यपारी होते थे। इन्हें विशेष अधिकारों के साथ पद दिये जाते थे। मुगलकालीन अमीरों को उस समय विश्व में सबसे अधिक वेतन मिलता था। अपने व्यक्तिगत जाति वेतन के अतिरिक्त इन्हे सैनिकों को दिये गये वेतन पर भी लाभ

मिलता था। कुछ व्यापार करके आय बढाते, कुछ ब्याज पर ऋण देते थे। मीरजुमला जैसे अमीर के पास अनेक पोत होते थे जो पश्चिमी और दक्षिण–पूर्व की ओर आते–जाते रहते थे। इनकी अधिकांश आय का स्त्रोत भू–राजस्व था। मोरलैंड ने ठीक ही कहा कुलीन सरदारों की जीवन शैली 'व्यय करने और जमा न करने की थी। बर्नीयर के अनुसार उनके मकान बड़े व सुन्दर थे। अमीर लोग भोजन पर खर्च करते थे। उनके खाने के लिए मध्य एशिया और अफगानितान से बढ़िया किस्म के फलों का आयात किया जाता था।

मध्यम वर्ग

मध्यम वर्ग के अन्तर्गत व्यापारी, व्यवसायी जैसे हकिम, वैध और निचले स्तर के अधीनस्थ अधिकारी होते थे। मुगल सरकार द्वारा मूल्यो, करो, मकानों की संख्या, भू–राजस्व अदा करने वाले और परिवार के नाम व जाति का पूरा विवरण लिखा जाता था। मुगल शासन दीवान, आमीन कारकून, छोटे अधिकारियों की आवश्यकता पड़ती थी। शिल्पियों को व्यापारियों की श्रेणी में रखा जाता था। सूरतसिंह नामक एक कारकून के बारे में यह विवरण मिलता है कि उसने लाहौर की शानो–शौकत वाले इलाके में 700रू0 में एक मकान खरीदा था। जमीदार लोग इसी के अन्तर्गत आते थे। परन्तु उनके जीवन–स्तर की जानकारी कम ही मिलती है। इनके अपने छोटे–छोटे गढ़ होते थे। जिसमें व अपने परिवार के साथ रहते थे। इनके भोजन के बारे सूरदास ने भी वर्णन लिखा है इस वर्ग की स्त्रियां अनेक प्रकार की बहुरंगी साड़ियां पहनती थी और पुरूष लोग शहर में रहने वालों की तरह जामा और काबा पहनते थे।

किसान वर्ग

किसानों की आदमनी के बारे में अन्दाजा लगना मुश्किल है क्योंकि उनके लेन–देन में मुद्रा का प्रयोग नही होता था। किसान में ग्रामीण समाज में तीन वर्ग थे। पहला वर्ग खुदकाश्त वर्ग था। जो स्वंय की भूमि के मालिक होने का दावा करते थे जिस पर वह काश्त करते थे। दूसरे वर्ग को पाही उपार या विदेशी कहते है जो दूसरे गांव में खेती करने जाते थे। तीसरा वर्ग मुजारियान अर्थात बढाईदारों का था जो खुदकाश्त करने वाले किसानों और जमीनदारों से जमीन भाडें पर लेते थे। एक वर्ग उन भूमिहीन किसानों का भी था जिनका स्तर चमारों, कुम्हारों, धोबियों आदि नौकरों जैसा था। कुम्हारों, चमारों, धोबियों को उनकी सेवा के बदले फसल कटाई के समय उत्पाद का एक निश्चित भाग दिया जाता था। फसलों की कटाई व बुआई के समय इनसे श्रमिकों का काम भी लिया जाता था। राजस्व अदा के नियमों की गणना करना कठिन है। सामान्य नियमों के आधार पर उत्पाद का 1/3 अथवा आधा भाग भू–राजस्व के रूप में अदा करते थे। सतीशचन्द्र के अनुसार राजस्थान के कुछ भागों में तीन उच्च जातियों, ब्राहामण, राजपूत, क्षत्रिय तथा वैश्य जाति के लोग रियाइती दर भू–राज्सव अदा करते थ। गांव में नियुक्त चौधरी और मुक्द्दमों से भी रियाइशी दर पर भू–राजस्व वसूल किया जाता था। इनके जीवन–स्तर के बारे में आइने–अकबरी के लेखक अबूलफजल ने बंगाल के सामान्य जन का वर्णन इन

शब्दों में किया –वे लोग अधिकतर नंगे रहते थे और शरीर के मध्य भाग को ठकने के लिए केवल लूंगी पहनते थे।

शहरी जीवन

मानवीय इतिहास में शहरों के विकास को क्रान्ति के रूप में देखा गया जिससे सभ्यता व इतिहास की शुरूआत हुई। लेकिन इस क्रान्ति का कोई कृषि सम्बन्धी आधार नही होता और गांव की आर्थिक गतिविधियों में शहर एक सहायक तत्व के रूप में नही होते तो न तो ये क्रांति हुई होती न हो अब हो सकती है। इस लिए कृषि का शहरी जीवन के उद्य में सर्वोच्च महत्व है। मोहम्मद हब्रीब में 1950 के दशक में उतरी –भारत में 13–14वीं शताब्दी में हुई शहरी क्रांति से सम्बन्धित सामान्य सिद्वान्त प्रतिपादित किया है। मुगल काल के दौरान शहरीकरण की प्रक्रिया का महत्व सल्तनत काल के शहरीकरण से भिन्न था कुछ प्रमाणों से पता चलता है कि कुछ शहरी केन्द्र पुनः विकसित हुए कुछ पुराने केन्द्रो का विस्तार हुआ। और नये शहरी केन्द्र उभरे जैसे इलाहबाद, फतेहपुर सीकरी, गुजरात, लौहार, प्रांत अटक बनारस और फरीदाबाद बड़े शहरों का विश्वव्यापी महत्व हो गया था। वहां से दक्षिण–पूर्वी एशिया मध्य–पूर्वी एशिया और पश्चिमी यूरोप के साथ अंतराष्ट्रीय व्यापार का नियंत्रण होता था। मुगलकाल मे ग्रामीण समुदाओं का शहरी समुदायों में परिवर्तन हुआ। कारिया और कस्बा से शहर बने। प्रशासनिक ढांचों के कारण भी शहरीकरण मे तीव्रता से वृद्वि हुई। कृषि के उन्नत तरीके और उत्पादन के बढ़ने से साम्राज्य की राजधानी प्रान्तीय, क्षेत्रीय राजधानियों व जिला मुख्यालयों का विकास हुआ। बर्नियर ने दिल्ली की मिट्टी की दीवारों वाली, छपर की झोपडियों का उल्लेख किया इन मकानों में सामान्य सैनिक, बड़ी संख्या में नौकर –चाकर और सेना व दरबार के साथ चलने वाले सैनिक रहते थे इन्हे **"छावनी का नगर"** कहा गया है।

मुगलकालीन व वास्तुकला का विकास

भारत में मुस्लिम वास्तुकला का विकास तीन चरणों में हुआ। दिल्ली सल्तनत के अन्तर्गत, स्वतन्त्र क्षेत्रीय विकास के अन्तर्गत तथा इन दोनो की परिणीती मुगल शैली के रूप में। दिल्ली सल्तनत के अन्तर्गत भवन निर्माण में मस्जिदें, मकबरें, महल व किलें शामिल किये गये। भवन निर्माणकला का विकास हिन्दु व इस्लाम परम्पराओं के मिश्रण पर आधारित था। दिल्ली सल्तनत से प्रभावित होकर कुछ मुख्य शहरों में जैसे गुजरात, बंगाल, कश्मीर में भवन निर्माण परम्परा द्वारा निर्माण कार्य किया गया। जौनपुर की मस्जिद इसकी मिसाल है। पंजाब व दक्कन में ईरान व मध्य एशिया की परम्परा का भी अनुसरण किया गया है। वास्तुकला की विशेषाएं निम्न प्रकार से उल्लेखित हैः– मुगलशासक अकबर, जहांगीर, शांहजहा के काल में वास्तुकला की विशेषताओं की अभिव्यक्ति भिन्न–2 शैलियों में हुई है। प्रत्येक शासन की अपनी अलग–2 विशेषतायें थी। इतना होने पर भी समग्र मुगलकालीन कला की एक अलग पहचान थी। मुगलकाल की वास्तुकला की विशेषता के आधार पर हम मुगलकालीन वास्तुकला व

सल्तनत कालीन वास्तुकला व प्रांतीय वास्तुकला के बीच भेद कर सकते है। मुगलकालीन भवन निर्माण योजनाएं बडे पैमाने पर तैयार की जाती थी। जिसमें लौकिक उपयोग के भवनो से लेकर धार्मिक प्रयोजन के लिए निर्मित भवन शामिल थे। श्रेष्ठतर सामग्री उपयोग करके विशाल भवनों का निर्माण किया गया जो दिल्ली सल्तनत के शासकों व क्षेत्रीय शासकों के प्रान्तों में संभव नही थे। विशाल भवनों को बलुआ पत्थर तथा बाद में संगमरमर से बनाया जाने लगा।

बाबर

प्रथम मुगलसम्राट के समय स्थानीय वास्तुकला सुव्यवस्थित नही थी। बाबर ने भारत में इस्लामी वास्तुकला को स्वंय् किसी प्रकार से प्रभावित नही किया गया। लेकिन बाबरनामा नामक संस्करण के अनुसार अपने खाली समय में राजधानी आगरा में एक उद्यानों परम्परा शुरू की। इस उद्यान में योजना सामंजस्यपूर्णता तथा ज्यामितिय शैली स्पष्ट होती है। भारत में यह परम्परा मुगल उद्यानों के नाम से विख्यात है। इस उद्यान परम्परा की जानकारी हमें कुछ ऐतिहासिक प्रमाणों से मिल सकती है। इनमें कुछ आंरभिक उद्यानों के विशेष आगरा के पास धौलपुर के पास खुदाई से मिले है। इस प्रकार से निर्माण कार्य का अन्य उदाहरण पानीपत की मस्जिद है। इसमें केवल यह विशेषता है कि इसका निर्माण ईटों से हुआ है।

हुमांयू

यह हम जानते है कि मुगल सम्राट हुमांयू अपने नये साम्राज्य को अपने हाथ मे नही रख सका। हुमांयू के समयकाल में वास्तुकला अधिक उन्नत नही हो पाई। इसका कारण हुमांयू के ऊपर उपकर्मी शासक शेरशाहसूरी का दबदबा हो सकता है। हुमांयू का साम्राज्य अपेक्षाकृत योग्य तो था परन्तु कला के क्षेत्र में मुगलों को अपना योगदान नही दे सका। अफगान शासक के हाथों में अपने साम्राज्य को सौपने से पहले ही 1533 में हुमांयू ने दिल्ली में एक नये नगर की नीव रखी। जिसका दीन–ए–पनाह नाम रखा गया। इस नगर की दीवारें रोडी से बनी हुई थी। वास्तुकला के क्षेत्र में हुमांयू ने केवल पहले बने हुए भवनों को ही महलों में रूपांतरित करवाया। आधुनिक इतिहासकार दीन–ए–पनाह नगर का सम्बन्ध पाण्डुओं की राजधानी इन्द्रप्रस्थ से जोडते है। जिससे आज पुराने किले से जोडते है।

अकबर

अकबर के शासन में भवन निर्माण कला उसकी प्रमुख विशेषता रही। जिस समय दिल्ली में हुमांयू का मकबरा बनाया जा रहा थी उसी समय तत्कालीन बादशांह अकबर ने अनेक भवनों की योजना बनाई थी। 1564 में अकबर द्वारा आगरे के किले की नींव रखी गई, हुमायूं के मकबरे खैर, उल मन्जिल नामक एक छोटी मस्जिद और खानेखाना के मकबरे जैसी मस्जिदों का निर्माण करवाया। अकबर के उदार किन्तु सशक्त प्रयास से भारत में नई निर्माण कला का सूत्रपात हुआ। अकबर की अस्थिर राजनीति के होते हुए भी भवन निर्माणकला बडे उत्साह से आरम्भ की गई। हमने देखा है कि हुमायूं के मकबरे में फारसी शैली का अपनाया गया। इस शैली मे हिन्दु व बौद्व परम्पराओं के समिश्रण का विकसित रूप

नजर आता है। अकबर ने अपने उतराधिकारियों के लिए एक साम्राज्य छोडा जो अखिल भारतीय स्वरूप लिये हुए था तथा मुस्लिम शासन परम्परा को भी सबल बनाया। जिस प्रकार सम्पूर्ण साम्राज्य प्रत्येक दिशा में ''अखिल भारतीय'' हो गया था, उसी प्रकार वास्तुकला में भी हिन्दु– मुस्लिम परम्परा का सच्चा समिश्रण देखने को मिला। मुगल सम्राट ने अपने आर्थिक व राजनीति नीति को मजबूत करते हुए अपने निर्माण कार्य फतेहपुर सीकरी व आगरा मे शुरू करवाया तथा विकसित रूप से भवन निर्माण करवाएं।

अकबरकालीन वास्तुकला विशेषताए

अकबर के अधीन बनाई गई अधिकाशं इमारतें का निर्माण लाल पत्थर से किया गया जो निकट क्षेत्र से बहुतायत मिलता है। परन्तु कही–2 पर संगमरमर का प्रयोग भी किया गया। भवन निर्माण कार्य सैद्वान्तिक रूप से योजनाबद्व करके किया जाता था। निर्माण में शहतीर को आधार बनाया गया यद्यपि छत्रियों के अलंकरण के लिए ट्यूडर मेहराबों का प्रयोग किया गया। अकबरी शैली में मेहराबी और शहतीरी शैली का अनुपात देखने को मिलता है। यह पंजाब व कश्मीर में प्रचलित काष्ठ निर्माण शैली से मिलती–जुलती नजर आती है। अकबर कालीन शैली के अन्तर्गत लोदी भवनों के गुम्बदों का प्रयोग किया गया। परागुम्बद प्रायः पोले है। तकनीकी दृष्टि से इनमें शुद्वता नजर नही आती। खम्बों के ऊपर चौतरफा शहतीर लगे हुए है जबकि आगे के खम्बों को प्रायः अनिवार्य रूप से टेक के लिए मेहराबदार बनाया गया है। कही–2 भवनों की भीतरी दीवारों और छतों के नीचे की ओर चित्रकारी भी की गई है।

प्रमुख भवन

इस शैली का सबसे पहला भवन आगरे का लालकिला था जो शादी महल भी था। अकबर ने अपने साम्राज्य में अनेक पारम्परिक महत्व के स्थानों पर ऐसे किलेनुमा निवास स्थान बनाए। इसमें विशेषकर जहांगीरी महल उसका परकोटा शामिल है।

अकबरकालीन इमारतें

1. दीवाने–ए–आम
2. दीवाने–ए–खास
3. आगरा का किला
4. जहांगीर का महल
5. पंच महल

जहांगीर

जहांगीर के शासनकाल में निर्माण कार्य इतनी सरगर्मी से नही हुआ था जितना की चित्रकारी का हुआ। उसके शासनकाल में फूलवाडी और बड़े उद्यानों का निर्माण हुआ। अकबर ने आगरा के पास सिकदरा में अपना मकबरा बनाने की योजना स्वंय तैयार की थी। परन्तु इसे कियान्वित जहांगीर द्वारा किया गया। यह मकबरा तराशे हुए तीन मन्जिला पिरामिड की शक्ल का है। इस मकबरें में आवश्यक, संसक्ता और पिड की कमी है। पूरा मकबरा एक सुव्यवस्थित उद्यान के बीच जिसके मुख्य भाग में महराब है। बलुआ पत्थर से बने हुए भूमि तल पर पीछे की ओर धसे हुए अनेक महराब है जो इतने सशक्त है कि अकबर की प्रतिभा द्वारा ही निर्मित हो सकते। इसके शासनकाल का एक अन्य उदाहरण

लाहौर के पास शाहदरा में बना उसका मकबरा है जो जहांगीर व उसकी पत्नी नूरजहां ने बनवाया। आगरा में एत्मादउद्दौला का मकबरा है। इसका आयोजन चतुर्भुजाकार है। मकबरा बेदाग संगमरमर का बना है। इसमें प्रयोग टाइले ईरानी शैली को दर्शाती है। कश्मीर के बागों के निर्माण के प्रसंग का उल्लेख किए बिना जहांगीर के शासनकाल के विकास का प्रसंग अधूरा ही रहेगा। विशालबाग जहांगीर के शासनकाल में बनकर तैयार हुआ। जहांगीर ने 777बागों का निर्माण करवाया।

शांहजहाँ

मुगल वास्तुकला का अंतिम व सर्वोत्कृष्ट चरण शांहजहाँ के शासनकाल में आरम्भ हुआ। इसका काल संगमरमर का काल भी कहा जा सकता है। शांहजहाँ द्वारा निर्मित संगमरमर के मण्डम ऐसे साम्राज्य की पृष्टभूमि सर्वाधिक उपयुक्त थे जो अपने चरमोष्कर्ष था। संगमरमर जोधपूर के मकराना नामक स्थान में मिलने वाला संगमरमर, कोण की अपेक्षा वृताकर कटाई के लिए उपयुक्त है संगमरमर में अलंकरण अधिक संश्लिष्ट होना चाहिए और इसमें युनम्य अंलकरण की अपेक्षा रंगीन पत्थरों की जड़ावट होनी चाहिए। तकनीकी दृष्टि से इसे पित्रादुरा कहा जाता है। मेहराबों की चाप पर्णिल बनाई जाने लगी जिनमें प्रायः नौ दंताकार नषक होते थ। इस प्रकार नक्काशी युक्त या परणिल महराब इस काल की विशेषता हो गए। गुम्बद ने भी अपेक्षाकृत फारसी रूप ले लिया। गुबंद दोहरा, उसका आकार बाहर से फूला हुआ और पतली गर्दन वाला होता, जो व्याण जैसा लगता था। गुम्बद का यही आकार शांहजहां को पसंद था। बंगाली शैली के मुडे हुए कगुरों अथवा झाजन युक्त छत का भी संगमरमर में प्रयोग किया इसके अतिरिक्त जंगले के खम्बों बेरकिटों के सर्पील शीर्ष और वर्णोआकर आधारो का प्रयोग भी इस काल की विशेषता थी। अंलकरण में पच्चीकारी के काम और जालीयों में तराशे गये नमूनों का भी प्रभाव दिखाई देता है। शांहजहां एण्ड आरफिएस तथा मुगल आर्किटैक्चर नामक अपनी पुस्तक में इब्बाकोच का मानना है कि प्राकृतिक तरीके से सजावट करने की प्रेरणा यूरोप से ली गई।

शांहजहाँ की प्रमुख इमारत

दीवानेआम	शाह बुर्ज
दीवाने खास	मोती मस्जिद
शीश महल	जामा मस्जिद

अतिंम चरण उसका पतन

1657ई0 औरंगजेब के सिंहासन पर बैठने के बाद साम्राज्य का विघटन शुरू हो गया और भवनकला का पतन आरम्भ हो गया। यह अवनति काल में अति रूढिबद्व शैली में बने भवनों में देखी जा सकती जिसमें घटिया अंलकरण किया गया और जिन में संतुलन का अभाव है। जिसका उदाहरण 1678ई0 मे औरगांबाद में बना औरंगजेब की बेगम रबिया दोरानी का मकबरा ताजमहल से प्रेरित है यघपि आकार में उससे आधा है। 1662 में लालकिले में बने भवनों में मोती मस्जिद के सुकुमार सौदंर्य विपरीत प्रभाव

डालने वाली लौहार की बादशांही मस्जिद है। इसकी विशेषता गोलाकार बंगाली छत और फूले हुए गुबंद। दूसरा उल्लेखनीय भवन दिल्ली का सफदरजंग का मकबरा है। जो अवध के दूसरे नवाब का मकबरा है। जिसमें भवन–निर्माण कला में उस समय आई अवनति स्पष्ट दिखाई देती है। इस मकबरे के ऊर्ध्वनुपात आवश्यकता से कही अधिक है जो इसकी अवनति को दर्शाते है।

मुगलकालीन चित्रकला का उद्भव व विकास

चित्रकला की जिस शैली की नीवं मुगलों ने डाली व एक ऐसे उन्नतिशील और शक्तिशाली कला आंदोलन के रूप में विकसित हुई। जिसने आने वाले मध्यकालीन युग में भारतीय कला के इतिहास की धारा को बदल दिया। बाबर स्वंय कलात्मक रूचि सम्पन्न व्यक्ति था परन्तु उसका शासनकाल अलग समय का होने के कारण चित्रकला की ओर ध्यान नही दे पाया। हुमायूं ने एक विशेष कला शैली को जन्म दिया। जब हुमांयू फारस व अफगानिस्तान में कुछ वर्षो के लिए निर्वासित व्यक्ति का जीवन व्यतीत कर रहा था जब उसने चित्रकला की नीव डाली। उसके समय के दो महान कलाकार मीर सैयदअली और खवाजा अबदु स्समंद। बालक अकबर ने इन्ही से चित्रकारी सिखी। इस अवधि में अबूद स्समंद ने जो कृतियां तैयार की उनमें से कुछ बादशाह जहांगीर के लिए तैयार की गई। गुलशन चित्रावली में संकलित है और अब वे तहरान के गुलिस्ता महल में संरक्षित है।

अकबर कालीन चित्रकारी

मुगलकाल में चित्रकाल मे जो सबसे पहले महत्वपूर्ण कृति देखने में आई वह दास्ताने–अमीर–हम्जा जो हम्जानामा नाम से प्रसिद्व है। यह एक दुर्लभ आंशिक पाडूलिपि के रूप में उपलब्ध है। इसमें 1200चित्र है, हम्जानामा का उल्लेख अबूल–फजल, बदांयूनी और शांहनवाज खां सभी ने किया है। अलाउद्यौला साजवीनी ने नफाईसूल मासिर में हम्जनामा को हुमायूं के मस्तिष्क की उपज कहा है। 1568 को आशिका पांडुलिपि के लघुचित्र में 1570 के अनवरे सुहाइली की पांडुलिपि में और एक बिना तारीख की शकुनशास्त्र और राशिचक्र तिलस्म नामक पांडूलिपि में गहरी समानता दिखाई देती है। तूतीनामा की 218 चित्र सभवंत अगले दशकों में चित्रित हुए थे। जब मुगल चित्रशाला में पर्याप्त संरचात्मक परिवर्तन हो गये और गुजरात, राजस्थान, लाहौर आदि स्थानों से अनेक चित्रकार मुगल चित्रशाला में भर्ती हुए। अबूलफजल ने आइने–अकबरी में 15 चित्रकारों के नाम गिनवाए है। जो निम्न प्रकार थेः–

1. दसवंत
2. बसावन
3. केशव लाल
4. मिशकिन
5. मुंकुद
6. फारूख
7. कलभक
8. माधू
9. जगन
10. महेश
11. खेमकरण
12. तारा
13. सांवल
14. हरिवंश
15. राम

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

जहांगीर कालीन चित्रकला

जहांगीर के समय पर चित्रकला अपने चरमोष्कर्ष पर थी वह स्वयं भी बहुत अच्छा चित्रकार था। इसके अधीन असख्य चित्रकार थे। जिनमें फारूखबेग, दौलत, मनोहर, बिशनदास, मसूंर, अबूल हसन आदि चित्रकार थे जिन्होने अपनी कलात्मक प्रतिभा की बदौलत मुगल चित्रकला के इतिहास में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित करवा लिया। फारूखबेग ने जब अकबरी चित्रण शाला में प्रवेश किया जब मुगल चित्रकार अपने स्वर्गयुग में थी। इसने बीजापुर के सुल्तान इबाहिम आदिल शाह का भी चित्र तैयार किया था। दौलत, मनोहर, बिशनदास, मसूंर सभी अकबर के शासनकाल के अतिंम वर्षो में खिलती कलियों जैसे कलाकारों के रूप में काम कर रहे थे दौलत, फारूखबेग का शिष्य था दौलत की कृतियों में रंगयोजना अपने आप में सर्वोत्कृष्ट थी। जहांगीर के चित्रकारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण थे, उस्ताद मसूर और अबूलहसन थे। बादशाह ने स्वयं उनकी तारीफ की और उन्हे नादिर–उल–असर और नादिररूजमां–उल–जमाँ की उपाधि दी। अपनी आत्मकथा में जहांगीर एक जगह पर लिखता है (चित्रों में मेरी रूचि और उनका मूल्यांकन करने की क्षमता उस स्थिति पर पहुंच गई है कि जब कोई चित्र मेरे सम्मुख आता है चाहे वह मृत्यु कलाकार का बनाया हुआ हो या जीवित का, तो मै उसे देखते ही लक्षण बता सकता हूँ कि यह अमुक चित्रकारी किसकी कृतिहै यदि कोई ऐसा सामूहिक चित्र हो जिसमें अनेक छवि चित्र बने हो और प्रत्येक चेहरा अलग–2 कलाकार को बनाया हो तो भी में पहचान कर सकता हूँ।

मुगलकला के विकास पर यूरोपीय कला के प्रभाव का उल्लेख भी आवश्यक है। यूरोपीय व्यापारी तथा धर्मप्रचारक के पहले वाले छिट–पुट राजाओं का भी यहां–वहां उल्लेख मिलता है जैसे अकबर के विशेष निमत्रंण पर सन् 1580 में गोवा से पहला ईसाई मिशन फतेहपुर सीकरी आया था। इन्होने अनेक वस्तुओं के साथ–2 ईसाई विषयक यूरोपीय चित्रों और नक्काशी की प्रतिलिपियां भी बादशाह को भेंट की। इन कलाकृतियों में नवीनता थी और इनकी तकनीकी गुणवता मुगलकाल से भी अधिक अच्छी थी। इन चित्रों को देखकर चित्रकारों ने यूरोपीयन नक्काशी के रेखाकंनो और अन्य विवरणों की नकल उतारकर इनमें लाल, नीले, पीले, हरे, गुलाबी आदि रंग भरें।

मुगलकालीन संगीत

मुगलकाल अपने समय में चंहुमुखी विकास के लिए प्रसिद्व रहा। मुगलों के पहले ही भारत में संगीत अपने जड़ जमा चुका था। दिल्ली सल्तनत में भी संगीत को तवज्जो दी गई थी। परन्तु बाद के शासकों के द्वारा संगीत को महत्व न देने के कारण संगीत कंही खो गया। परन्तु मुगलों के आगमन से संगीत में फिर से जान आ गई। यघपि बाबर का शासनकाल मात्र चार वर्ष का था परन्तु अपने अल्पकालीन समय में भी बाबर अपने संगीत प्रेम और मर्मज्ञता के फलस्वरूप संगीत गोष्ठियों के लिए समय निकालता था। अवसर मिलने पर यात्रा में भी बाबर गान गोष्ठियो का आयोजन करता था। हुमायूं को संगीत विरासत में भी मिला। हर सोमवार और बुधवार के दिन मुराद के दिन कह जाते थे। वह सोमवार व बुधवार को गाना सुनता था। विशिष्ट लोगों का समूह दरबार में गान आयोजन करता था।

हुमांयू के गायको व वादकों की सूचि में 29 गायको व वादकों के नाम मिलते है। हुमांयू के बाद अकबर का काल संगीत का स्वर्णयुग कहा जाता है। अकबर के काल में तानसेन जैसा सुप्रसिद्व कलाकार था जिसनें संगीत को उसकी चरमसीमा तक पहुंचा दिया था। अबुलफजल के अनुसार ''बादशाह सलामत संगीत पर ध्यान देते थे और सभी लोगों को संरक्षण देते है जो संगीत में निष्णात होते है। उनके दरबार में सैकडों गायक है–हिन्दु, ईरानी, तुरानी, कश्मीरी आदि थे, इन्हें सात भागों में विभाजित किया गया था। तानसेन धुप्रद शैली के कलाकार थे। उस समय धुप्रद शैली तथा बीन शैली वादन का प्रचार था। अधिकतर धुप्रद ब्रज भाषा में रचे गए थे। धुप्रद के गायकों में अन्य नाम– बैज, बख्श, गोपाल, हरिदास, सुरदास, रामदास, सुभानखां, सुरजनखां, मियां चांद, विचित्र खां, वीरमण्डल खां, सरोद खां, मियांलाल चांद खां व शहाब खां आदि काफी लोकप्रिय थे। अकबर ने तानसेन को 'कण्ठाभरणवाणी विलास' उपाधि दी गई जो उस समय संगीत की महता को दर्शाती है। अकबर के समय धुप्रद गायन की चार विशिष्ट गायन शैलियां प्रचार में थी जैसे नोहारवाणी, खण्डारवाणी, गौवरहारी या गौराटीवाणी तथा डागुरवाणी थे। परन्तु धीरे–2 धुप्रद शैली का प्रचार कम होता गया और समयांतर में धुप्रद का स्थान नवनिर्मित 'ख्याल गायन शैली' ने ले लिया। उसी काल में हरिदास भी वृदांवन में रहकर भगवान की उपासना भी रत रहते थे। वे महान संगीतज्ञ भी थे। जहांगीर ने भी अपने शासनकाल मे संगीत को तवज्जों दी थी। वह संगीत प्रेमी था। तानसेन के छोटे पुत्र विलासखां, हतरखां, खुर्रमदाद, मुक्खू और हमजान आदि इसके प्रसिद्व दरबारी कलाकार थे। शौकी नाम गजलगायक को जहांगीर ने 'आंनदखां' की उपाधि से विभूषित किया था। शाहंजहा अत्यंत रसिक प्रकृति का बादशाह था वह दिन में डेढ़ या दो घटें तक संगीत का आंनद लेता था। विलासखां के दामाद लाल खां को शाहंजहा ने गुणसमन्दर की उपाधि दी थी। परन्तु शाहजहां के उत्तराधिकारी औरंगजेब का समय संगीत के लिए अधंकार लेकर आया। औरगंजेंब ने अपने दरबार में संगीत को बंद करवा दिया था। फिर भी उसके शासन में गायक एवं वादको को दरबारी स्थान प्राप्त था। जिनमें खुशहाल खां, विसरामखां, हयात सरससैन, सुखीसेन आदि। फकीसल्लाह ने औरंगजेब को भी समर्पित करने के लिए रागदर्पण के नाम से मानकूतूहल का अनुवाद किया औरंगजेब के बाद संगीत की स्थिति सामान्य रही और उसमें कोई विशेष उल्लेखनीय परिवर्तन नही आया। 18वी. शताब्दी के पूर्वार्ध में मुहम्मदशाह रंगीला के दरबार में नेयतखां सदांरग और उसके भतीजे अदारंग ने ख्याल गायकी को परवान चढाया और ख्याल अंग की अनके रचनाएं की जो आज तक प्रचलित है। 18वी0 शताब्दी के पूर्वार्ध में ही ख्यालशैली के साथ–2 सितार का भी आविष्कार हुआ। सितारवाद्य के आविष्कारक खुसरो खां तेरहवीं शताब्दी के अमीर खुसरों से पृथक थे। अमीर खुसरों ने सितार व तबले का आविष्कार किया। अतः संगीत जगत के इन अविष्कारों को न तो भुलाया जा सकता है और ना ही भुलाया जा सकेगा। आधुनिक युग में ख्याल गायकी, सितार, तबला तीनों ही सर्वाधिक लोकप्रिय है।

मुगलकालीन भाषा और साहित्य

10वी शताब्दी के लगभग तुर्को के आगमन के साथ ही भारत में फारसी सांस्कृतिक परम्पराओं का दोबारा प्रचलन होने लगा। तुर्की विषय के साथ ही भारत में फारसी भाषा का प्रवेश हुआ और धीरे–2 इनके शासन के साथ ही फारसी भाषा का स्थान सर्वोतम रहा। मुस्लिम विद्वानों से इसे प्राथमिकता दी व इसे राजभाषा का दर्जा मिला इस प्रक्रिया में सर्वप्रथम महत्वपूर्ण कदम सिकन्दर लोदी द्वारा प्रशासन का फारसीकरण करना है परन्तु जब मुगलों ने अपनी सत्ता स्थापित कि तो फारसी भाषा का स्वर्णयुग प्रारम्भ हो गया। अब तक भी फारसी भाषा को तवज्जों देने लगें। जिसका उदाहरण ईश्वरदास नागर की रचना फुतुहात –ए–आलमगीरी व भीमसेन की नुस्खा–ए–दिलकुश फारसी के साथ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का दबदबा भी बना रहा जैसें पंजाबी, कश्मीरी, सिंधि, बंगला, मराठी और हिन्दी की अनेक बोलिया। मराठी भाषा ने फारसी भाषा के अनेक शब्दों को ग्रहण कर लिया जैसें वतन, तरफ, दबीर, पेशवा। ब्रजभाषा व अवधि आदि भाषाओं ने भी फारसी का खुलकर समर्थन किया। 17वी. शताब्दी के दक्षिण में मुगल साम्राज्य के विस्तार ने हिन्दवी और दकनी के बीच सम्पर्क को और अधिक दृढ़ किया। 18वी शताब्दी के आरम्भ से ही फारसी के प्रभुत्व के विरूद्व विद्रोह के परिणामस्वरूप दिल्ली में उर्दू को एक सम्पूर्ण साहित्यिक भाषा बनाने के विधिवत प्रयास होने लगे थे। मुगलकाल में फारसी भाषा में सर्वाधिक पुस्तके लिखी गई। यह शुरूआत बाबर के समय से ही आरम्भ हो गई थी। कुछ महत्वपूर्ण शासक व उनसे सम्बन्धित पुस्तकेंः– मुगलकाल में कुछ शासकों ने स्वंय अपनी आत्मकथा लिखी तो कुछ शासको के सरक्षित लेखको ने यह कार्य किया और उनका इतिहास लिखा।

बाबर

मुगलकाल की आधारशीला रखने वाले बाबर ने अपने जीवन से सम्बन्धित अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' लिखी। इसे तुजके बाबरी भी कहा जाता है। यह पुस्तक तुर्की भाषा में लिखी गई है। शेख जेतुद्वीन ख्वाजा ने जो बाबर का सदर–उस–सुदूर था, इसका अनुवाद फारसी में किया लेकिन इसमें सिर्फ खानवा के युद्व की लडाई के बारे में वर्णित है। 1583 में बाद में अकबर के आदेशानुसार खान–ए–खाना ने इसका फारसी में फिर अनुवाद किया। अंग्रेजी में इनका अनुवाद 1826 में मिसेज ए0एस0 बेवरिज द्वारा किया। बाबरनामा ने जून 1504 में 1529 तक के हालात मौजूद है और इससे तीन भागों मे बांटा जा सकता है। पहला भाग बाबर के फरगना के तख्त पर बैठने से शुरू होता है और उसके आखिरी समखरी समरकंद छोडने पर खत्म होता है। दूसरा भाग हिन्दुस्तान के आखिरी हमले पर खत्म होता है। तीसरा आखिरी हमले पर खत्म होता है। तीसरा हिस्सा हिन्दुस्तान के हालात से सम्बन्धित है।

हुमांयू

हुमांयू से सम्बन्धित कई रचनायें है जिसमें हमें हुंमायू के जीवन से सम्बन्धित घटनायों व उसके शासनकाल के बारे में जानकारी मिलती है। उनसे पता चलता है कि कैसें हुमांयू अपने निर्वासित समय में यहां से वहां भटका।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

कानूने हुमायुंनी

यह खोदमीर की रचना है वह हुमांयू से ग्वालियर में मिला था मार्च 1533 में उसने इस किताब की रचना शुरू की व मई 1534 तक इसे पूरा किया। इसमें नौ अध्याय है। यह एक समसामयिक ग्रन्थ है इसमें लेखक ने अपने आंखो देखा वर्णन किया है जिसके कारण यह भरोसे के काबिल रचना है। इसमें हुमायूं के उसूल, उसके शासन सम्बन्धित अनुभव व नई–नई दरबार की रस्में जो लेखक ने खुद देखी है वह बंया करके उस दौर के सामाजिक जीवन का वर्णन किया है। इसके साथ इसमें कुछ कमियां भी है। उसने हुमायूं की जबरदस्त चापलूसी की है उसे सिकन्दर–ए–आजम, खुदा का साया जैसी पदवियों से सम्मानित किया है। इसकी भाषा कठोर फारसी होने के कारण इसे समझना थोडा कठिन है परन्तु फिर भी यह एक ऐतिहासिक ग्रंथ है।

हुमांयूनामा

यह भी हुंमायूं से सम्बन्धित रचना है जिसकी रचना गुलबदन बेगम द्वारा की गई थी जो बाबर की बेटी थी। हुमायूंनामा दो भागों में बंटा हुआ है पहला भाग बाबर के इतिहास से सम्बन्धित है तथा दूसरा भाग हुमांयू के हालात बयान करता है इसमें बेगम ने हुमांयू के जीवन, उसकी लडाईयां, उसके दुख एंव संकट आदि का वर्णन विस्तार से किया है। किताब का वह हिस्सा जो हुमांयू से सम्बन्धित है तीन भागों में बंटा हुआ है। पहले हिस्से में हुमांयू के सिंध छोडने से काबुल पहुंचने और कामरान को अंधा करने तक की घटनाएं है। दूसरे हिस्से में हुमांयू की सिंध से ईरान की यात्रा और काबूल की जीत का जिक्र है तीसरे हिस्से में खिजर ख्वाजा ओर दूसरे रिश्तेदारों के बयान किये हुए हालात है। अतः यह रचना भी अपनी एतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

तजकीरात वाकयात

इसका रचनाकार जौहर आफतावची है जो हुमांयू का एक पुराना नौकर था। इसकी रचना 1586–87 में शुरू हुई थी। यह हुमांयू की उन घटनाओं का वर्णन करता है जो उसके जीवन से प्रत्यक्ष रूप से जुडी हुई थी इसमें हुमांयू को हीरों माना तथा उसके सारे कार्य ठीक बताये है।

अकबर

अकबर का काल साहित्य का स्र्वणयुग कहा जाता है इसके काल में साहित्य अपने ऊपरी सीमा पर था यह न केवल फारसी बल्कि और भी अन्य भाषाओं के उत्कर्ष का काल भी था। इस काल में अनेक रचनाएं रची गई। अकबर के दरबार में अनेक महान कवि एवं विद्वान प्रतिष्ठित रहे जिसके कारण उसके शासन में चार चांद लगें।

तोहफा–ए–अकबरशाही– यह रचना अब्बासखां की है। उसने अकबर के आदेश पर लिखी है। इसमें शेरशाह सूरी के कारनामों को उजागर करने की कोशिश की है।

तारीख–ए–शाही

अहमद यादगार ने किताब के आरम्भ में ही अपने को सूर पादशाहों का पुराना मुलजिम बताया है। यह किताब बहलोल लोदी के काल से आरम्भ होकर हेमू के कत्ल पर खत्म होती है। 1614 के लगभग जहांगीर के काल में यह किताब पूरी हुई। इसमें बाबर के आखिर 2 सालों का वर्णन है जो उसके बाबरनामा के अधूरेपन को पूरा करता है।

तजकिरा–ए– हुमांयू व अकबर

इसका लेखक बायजीद बयात जो 1587 से शाही रसोई प्रबंधक के पद पर कार्यरत रहा। इसके अनुसार अकबर ने आदेश दिया था कि सभी सूझ–बूझ दरबारी जिन्हें हुमांयू से सम्बन्धित जो कुछ याद है उसे कलमबंद किया जाए। बायजीद ने इस किताब की रचना भी इसी हुक्म के अनुसार ही की थी। यह काफी सालों तक हुमांयू के साथ रहा था। इसमें अकबर से सम्बन्धित भी अनेक जानकारी मिलती है। बायजीद की यह रचना सिर्फ उसकी याददाश्त पर आधारित है इसलिए घटनाओं का क्रम ठीक नही है और कुछ बातों को दोहराया भी गया है वह कट्टर मुसलमाल होने के कारण हुमांयू की वह आलोचना भी करता है। इस प्रकार बायजीद का तजकिरा अकबर के काल का अमूल्य स्त्रोत रहा।

अकबरनामा

अबुलफजल अकबर के दरबार के नौ रत्नों में से एक रत्न था। उसके द्वारा रचित अकबरनामा मुगलकालीन प्रसिद्व रचना है। जिससे हमें महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। 1574 में अबुलफजल अकबर की मुलाजमत में दाखिल हुआ। 1589 या 1590 में उसको अकबर के काल का इतिहास लिखने का आदेश मिला। अबुल फजल ने खुद भी दरबारियों से पूछताछ की व सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की। अबुल का मकसद अकबर के रूहानी पहलू को उजागर करना था (अकबर की सुलह–ए–कुल की नीति को लोगों तक पहुँचाना था। उसने दर्शनशास्त्र की भाषा और अदांज को ऐतिहासिक जरूरतें पूरी करने के लिए इस्तेमाल किया है। अकबरनामा 1597–98 में पूरा किया गया और यह तीन जिल्दों में बंटा हुआ है। पहला किस्सा अकबर की पैदाईश के तफसील ब्यान से शुरू होकर 15 सितम्बर 1572 पर खत्म होता है यानि अकबर के तीस साल का इतिहास इसमे वर्णित है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य विषयों को इसमें सम्मिलित करके इसे दिलचस्प बनाया है जैसे सृष्टि की रचना, विभिन्न धर्म की विचारधारा, आदम और इसके पैगम्बरों के वर्णन व अकबर के पूर्वजों के हाल आदि। दूसरे हिस्से में अकबर की तख्तेनशीनी से लेकर उसके 46वे साल तक का इतिहास वर्णित है। तीसरा हिस्सा सबसे महत्वपूर्ण है। जिसमें इल्मीमयार, तहकीक की गहराई और तारीखी सूझबूझ का वर्णन है इसके पांच हिस्से है पहले हिस्से 10, दूसरे में 30, तीसरे में 16 ''आईन'' है। चौथे हिस्से में हिन्दुस्तान की जातियां, ऋतुओं, फसलों और कुदरत सौदंर्य का ज्रिक है। इसके अलावा हिन्दुस्तानी फलसफे, साहित्य, राजनीति, धार्मिक जीवन, न्याय प्रणाली, हिन्दुस्तानी संतों व विदेशी सूफियों की भी जीवनियां दी गई है।

तबकात–ए–अकबरी

यह निजामुद्दीन अहमद द्वारा रचित है इसमें भीं अकबर से सम्बन्धित जानकारी है। मुन्तखब–उत–तवारीखः– अब्दुलकादिर बंदायूनी द्वारा यह मुगलकाल की एक और अहम तारीख है।

जहांगीर

जहांगीर के काल की जानकारी के लिए जंहागीर खुद एक प्रमुख इतिहासकार है। जहांगीर स्वंय एक शिक्षित शासक था उसके द्वारा स्वंय अपनी आत्मकथा इस बात का प्रमाण है। तुजुके–ए–जहांगीरी इस काल का प्रथम स्त्रोत है इसमें लडाईयों के पूरे हालात, उनके कारण शाही फौजों की दक्षिण में हार, शाही अफसरों में फूट, उनके लगातार तबादले और उनका अपने कर्तव्य से मुंह मोडना जैसे वाकियान विस्तार से वर्णन किए गए है।

इकबालनामा –ए–जहांगीरी

जहांगीर के 16वे साल से मोतमिद खां दरबार में रहा था और बादशाह के साथ घूमने का उसे पूरा मौका मिला था तुजुक के 19वें साल तक के हालात जैसा कि ऊपर बताया गया उसी ने लिखे थे। इकबालनामा में जहांगीर के 19वें साल के बाद हालात जानने के लिए एक मात्र स्त्रोत है।

शाहजहां

शाहजंहा के इतिहास के बारे में भी जाने के लिए अनेक ऐतिहासिक रचनाएं है। मोहम्मद अमीन कजवीनी का पादशाहनामा, अब्दुलहमीद लाहौरी का पादशाहनामा में शाहजहां के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है। अमल –ए–सालेहः इसका लेखक मोहम्मद सालेह कम्बों, फारसी और हिन्दी का अच्छा शायर था। उनका मनसब 500 था। उसने शाहजहां के काल का पूरा इतिहास लिखा है। शाहजहां के दौर में सल्तनत के हालात और अफसरों से सम्बन्धित जानकारी सादिकखां की तारीख–ए–शाहजहांनी से मिलती है इसमें शाहजहां के आखरी दौर का वर्णन किया है। एक अन्य लेखक चन्द्रभान ब्राहमण है शाहजहां की शासन–प्रणाली और उसकी वास्तविक कार्य–प्रणाली पर चहार चमन सर्वोश्रेष्ठ काम है।

औरंगजेब

अन्य शासको की तरह औरंगजेब का काल भी रचनाओं की दृष्टि से महत्वर्पूण है उसके समकालीन अनेक इतिहासकार हुए जिन्होने अपने –2 अंदाज में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की है जिसमें हमें औरंगजेब की कट्टरता व उसके शासन प्रणाली, उसकी दक्षिणी विजय तथा उसके समकालीन विद्रोह का वर्णन भी मिलता है।

औरंगजेब कालीन रचनाएंः–

आलमगीरनामा

आलमगीरनामा के लेखक काजिम शीराजी जो औरंगजेब के काल का सरकारी इतिहासकार है इसमें औरंगजेब के पहले 10 सालों का इतिहास है। इसमें सारी महत्वपूर्ण घटनाओं मशहूर लोगों के हालात आदि नोट किए गए है। इसमें औरंगजेब की तारीफ व उसके भाईयों तथा शाहजंहा की आलोचना की गई है। काजिम के ढंग पर ही हाजिमखां ने भी आलमगीरनामा लिखा है जिसमें शुरू के 10 सालों का वर्णन किया गया है।

वाकयात–ए–आलमगीरनामा

तख्तेनशीनी की लडाई का आंखो देखा वर्णन आकिलखां राजी ने अपनी पुस्तक में लिखा है जिसमें इस पुस्तक की महता झलकती है कि किस प्रकार ग्रहयुद्व आरम्भ हुआ था। इसी समय के एक ओर लेखक सुरजनभंडारी ने खुलासत–उत–तवारीख लिखी इसमें औरंगजेब के काल की भौगोलिक सीमा, खास–2 व्यापारिक मार्गो का ज्रिक व पंजाब के बारे में दिलचस्प जानकारी मिलती है।

मुन्तखब उल लुबाब

यह पुस्तक खफी खां द्वारा रचित है जो औरंगजेब के काल का आलोचनात्मक वर्णन है। जिसमें मुगलों द्वारा किसानों के सताए जाने के जोरदार वर्णन किया है। यह छिपकर लिखी गई है।

फुतहात–ए–आलमगीरी

ईश्वरदास नागर की महत्वपूर्ण रचना जिसमें औरंगजेब के 34 सालों का इतिहास है। राजपूतों के साथ औरंगजेब के सम्बन्धों का पूरे विस्तार का ब्यान किया गया है।

नुस्ख–ए–दिलकुशा

मुगलों की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति का वर्णन इस पुस्तक में लेखक भीमसेन सक्सेना द्वारा किया गया है। मुगल फौजों द्वारा फसलों के बर्बाद किये जाने का इसमें वर्णन मिलता है।

मासीर–ए–आलमगीरी

यह भी एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है। इसमें औरंगजेब के 11 साल से 20 साल तक के हालात समकालीन लेखक साकी मुसतइद खां द्वारा ब्यान किए गए है। इसमें सतनामी विद्रोह का वर्णन भी बड़े स्पष्ट रूप से किया है। इसमें 1680 के बाद अफसरों के तबादले, नियुक्ति और तरक्की की चर्चा के कारण जदुनाथ सरकार ने इसे ''मुगल राज्य का गजिटीयर'' कहा है।

निष्कर्ष :

मुगलकालीन समाज व संस्कृतिक रूप से स्वर्णयुग रहा। अनेक शक्तिशाली राजा हुए जिन्होने अपना सुदृढ़ राज्य स्थापित किया। मुगलकाल चारों तरफ से उन्नति का काल रहा है। सांस्कृतिक दृष्टि से जितना विकास मुगलकाल में हुआ उतना न इससे पहले हुआ ना ही उसके बाद। मुगलकालीन इमारते आज भी इसकी सुदृढ़ता एंव उन्नति के परिचायक है। इसके अलावा अनेक यूरोपीय यात्री भी भारत में

मुगलकाल में आए जिनके यात्रा वृतांत से भी मुगलकालीन समाज का पता चलता है। जहां बाबर न मुगल साम्राज्य की नींव रखी, अकबर ने सुदृढ़ता प्रदान की व औरंगजेब ने अपने आखिरी दम तक इसे बचाने का प्रयास किया। अकबर अपने राज्य को चारो तरफ से उन्नति की ओर ले गया। मुगलबादशाहो ने अपने दरबार मे इतिहास लिखने के लिए अनेक प्रसिद्व इतिहासकार रखे व लेखकों की नियुक्ति की। प्रसिद्व संगीतज्ञ उनके दरबार की शोभा थे। अनेक प्रसिद्व वास्तुकार हुए जिन्होने उनके इमारत निर्माण में चार चांद लगाए। मुगलकाल में हिन्दु–मुस्लिम एकता का जो समन्वय मिला है वह भी अद्वितीय है। आपस में उनके विचारों का आदान–प्रदान हुआ जिससे मिश्रित शैली पनपी परन्तु धीरे–धीरे औरंगजेब की मृत्यु के बाद आने वाले शक्तिहीन व कायर शासक हुए जिसकी बदौलत धीरे–धीरे यह पतन की ओर अग्रसर हुआ। मुगल दरबार राजनैतिक पार्टियों का अखाड़ा बन गया जिसने स्थिति में और बिगाड़ पैदा हुआ। चूंकि सम्राट के अधिकारों पर उमरा वर्ग ने नियन्त्रण कर लिया था। इसलिए सम्राट उनके हाथ की कठपुतली बन कर रह गया और देश का सारा कामकाज खुर्दगर्ज व लालची अमीरों के हाथ में आ गया। केन्द्रीय शासन की कमजोरी की वजह से उमरा व जमीदारों ने देश के विभिन्न प्रांतों में अपने राज्य कायम किए इस प्रकार लगभग 150वर्षो का मुगल साम्राज्य क्षीण हो गया व बाकि कसर बाहरी आक्रमणों ने पूरी कर दी। इस प्रकार मुगल साम्राज्य का ढांचा पतन की ओर अग्रसर हो गया।

सन्दर्भ सूची :

1. मध्यकालीन भारत (भाग–2) हरिश्चन्द्र वर्मा, दिल्ली विश्वविद्यालय।
2. ए0एल0 श्रीवास्तव, अकबरमहान, 3 संस्करण, आगरा 1972,
3. अकबरनामा खण्ड 3
4. बाबरनामा
5. हुमायूंनमा
6 जहांगीरनामा
7 आलमगीरनामा
8 शाहजहां एडं आरफियस मुगल आर्किटेक्चर, इब्बा कोच
9 अब्बदुस्समद, गुलशन चित्रावली
10 हम्जानामा (।।) अलाउद्यौला काजवीनी, नफाइसुल मासिर
11 स्कूल ऑफ ओरिएंटल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज, (लंदन) अनवरे सुहाइली
12 कलकता, इकरंगा रेखाचित्र
13 अकबरनामा, लघुचित्र विक्येरिया और अल्वर्ट सग्रंहालय (लंदन)
14 नफहत –उल–उन्स, लधुचित्र ब्रिटिश म्यूजियम
15 सोमनाथ, राम विबोध
16 पंडित दामोदर, संगीत वर्पण

17 निजामुद्दीन अहमद, तबकात–ए–अकबरी

18 एच.के. नक्वी, मुगलकालीन शहरीकरण शिमला

19 हरबन्स मुखिया, अकबरकालीन धार्मिक इतिहासकार

20 इब्बाकोच, मुगलकालीन भवन –निर्माण कला के विकास का इतिहास 1526